

绘图  
儿童读典故



许康铭  
编

绘 图

江苏工业学院图书馆  
藏 章

读 典 故

湖南地图出版社

(湘)新登 008 号

绘图:阳春 苏宇 徐英华

装帧:徐敏

## 儿 童 读 典 故

许康铭 等编

责任编辑:文定

湖南地图出版社出版发行

长沙市文华印刷厂印刷

1993年6月第1版 1993年6月第1次印刷

字数:4,5000 印张:6 印数:1—30000 册

统一书号:ISBN 7-80552-113-1/K 109

定价:4.50元

# chū bǎn shuō míng

## 出 版 说 明

在我国悠久的历史长河中,涌现出了许多古代的名著名篇。为了弘扬民族文化,开发少年儿童的智力,丰富他们的语汇,训练他们的形象思维和语言表达能力,从古代名著中吸取养分,我们编辑了这套丛书,取名《麒麟文库》。

麒麟和龙、凤一样都是中国传统观念的产物。古代传说中这种动物,其状如鹿,独角,全身鳞甲,尾象牛,古人在想象中把它作为吉祥和灵气的象征。权且把它作为这套丛书的吉祥命名吧!

我们根据少年儿童的特点,参照小学教材选编了《唐诗》、《唐宋词》、《成语》、《典故》四本册子。为了便于阅读,每篇题目加上拼音,并采用了一篇一画,图文互补的形式。这些诗文具有语言凝炼,意境优美,朗朗上口,易懂易记,适合于年轻的爸爸妈妈辅导孩子们学习用。

愿《麒麟文库》能成为你们家庭中的好朋友。

计艾贴出扶难出图此南脚  
书由丁海印单文市妙升  
图书馆1991年3月2001 班1集1月2001  
馆 0000E—1. 简印 0.30元 0005. 1. 善字  
001 月 1-11-2208-5 ISBN 978-7-5301-0220-1  
元 0.24. 仙宝

|      |      |       |      |
|------|------|-------|------|
| (1)  | 延武燕游 | (2)   | 不善人善 |
| (8)  | 晋书事  |       | 仓鼠邀和 |
| (6)  | 凌月缺矣 |       | 猴告吞虫 |
| (2)  | 意不出  |       | 牛干耕  |
| (4)  | 列果空同 |       | 金砖寄寓 |
| (3)  | 班固自题 |       | 大解夷使 |
| (1)  | 养身手记 |       | 铁杵成针 |
| 爱 鹅  | (1)  | 百折不挠  | (23) |
| 出口成章 | (1)  | 日近长安远 | (23) |
| 爱屋及乌 | (3)  | 打草惊蛇  | (25) |
| 书编三绝 | (3)  | 良禽择木  | (25) |
| 萍水相逢 | (5)  | 削足适履  | (27) |
| 牧羊读书 | (5)  | 移木之信  | (27) |
| 形影相吊 | (7)  | 左右逢源  | (29) |
| 莼鲈之思 | (7)  | 尽忠报国  | (29) |
| 欲速不达 | (9)  | 白驹过隙  | (31) |
| 戴逵破琴 | (9)  | 有脚阳春  | (31) |
| 投桃报李 | (11) | 汗牛充栋  | (33) |
| 误托洪乔 | (11) | 举案齐眉  | (33) |
| 筚路蓝缕 | (13) | 亦步亦趋  | (35) |
| 程门立雪 | (13) | 铁杵成针  | (35) |
| 张冠李戴 | (15) | 以邻为壑  | (37) |
| 毕 卓  | (15) | 麇 鹿   | (37) |
| 土崩瓦解 | (17) | 得鱼忘筌  | (39) |
| 焚书坑儒 | (17) | 逢人说项  | (39) |
| 一鸣惊人 | (19) | 老当益壮  | (41) |
| 刻舟求剑 | (19) | 黄粱一梦  | (41) |
| 党同伐异 | (21) | 白璧微瑕  | (43) |
| 蓝田生玉 | (21) | 塞翁失马  | (43) |

# 目 录

|      |      |       |      |
|------|------|-------|------|
| 寄人篱下 | (45) | 指鹿为马  | (71) |
| 暗渡陈仓 | (45) | 事半功倍  | (73) |
| 生吞活剥 | (47) | 完璧归赵  | (73) |
| 孺子牛  | (47) | 出其不意  | (75) |
| 暮夜却金 | (49) | 司空见惯  | (75) |
| 赴汤蹈火 | (49) | 明目张胆  | (77) |
| 附庸风雅 | (49) | 毛遂自荐  | (77) |
| 抱薪救火 | (51) | 未雨绸缪  | (79) |
| 班荆道故 | (51) | 孟母三迁  | (79) |
| 掩目捕雀 | (53) | 旷日持久  | (81) |
| 卧雪吞毡 | (53) | 重作冯妇  | (81) |
| 陈陈相因 | (55) | 曲高和寡  | (83) |
| 董宣强项 | (55) | 余音绕梁  | (83) |
| 文质彬彬 | (57) | 美轮美奂  | (85) |
| 孔融推梨 | (57) | 画龙点睛  | (85) |
| 强弩之末 | (59) | 竭泽而渔  | (87) |
| 望云   | (59) | 貌瘦天下肥 | (87) |
| 尸位素餐 | (61) | 白云苍狗  | (89) |
| 锦屏射雀 | (61) | 史鱼之心  | (89) |
| 集腋成裘 | (63) | 众口铄金  | (91) |
| 草木皆兵 | (63) | 羊续悬鱼  | (91) |
| 色厉内荏 | (65) | 锲而不舍  | (93) |
| 咏絮才女 | (65) | 旗亭画壁  | (93) |
| 草菅人命 | (67) | 相濡以沫  | (95) |
| 割席分坐 | (67) | 锦囊佳制  | (95) |
| 哗众取宠 | (69) | 一丘之貉  | (97) |
| 读书三余 | (69) | 一人得道  | (97) |
| 指桑骂槐 | (71) | 捉襟见肘  | (99) |

|       |       |      |       |
|-------|-------|------|-------|
| 扇枕温被  | (99)  | 千日酒  | (127) |
| 东窗事发  | (101) | 杀彘教子 | (129) |
| 守株待兔  | (101) | 如坐针毡 | (129) |
| 一诺千金  | (103) | 入木三分 | (131) |
| 一傅众咻  | (103) | 入乡随俗 | (131) |
| 含沙射影  | (105) | 铜臭   | (133) |
| 图穷匕见  | (105) | 推敲   | (133) |
| 临渊羡鱼  | (107) | 鞭长莫及 | (135) |
| 断织劝学  | (107) | 囊萤照读 | (135) |
| 心旷神怡  | (109) | 耳提面命 | (137) |
| 不觉技痒  | (109) | 失斧疑邻 | (137) |
| 利欲熏心  | (111) | 歧路亡羊 | (139) |
| 作壁上观  | (111) | 骑者善堕 | (139) |
| 举一反三  | (113) | 泥牛入海 | (141) |
| 卧冰求鱼  | (113) | 牛角挂书 | (141) |
| 高屋建瓴  | (115) | 披裘负薪 | (143) |
| 高阳酒徒  | (115) | 佩韦佩弦 | (143) |
| 马头草檄  | (117) | 天衣无缝 | (145) |
| 马跃檀溪  | (117) | 天灾人祸 | (145) |
| 磨砖成镜  | (119) | 陈平分肉 | (147) |
| 磨穿铁砚  | (119) | 陈蕃一室 | (147) |
| 莫须有   | (121) | 子虚乌有 | (149) |
| 木犹如此  | (121) | 子罕辞宝 | (149) |
| 鸥鸟忘机  | (123) | 举足轻重 | (151) |
| 欧冶    | (123) | 燕昭筑台 | (151) |
| 弄潮儿   | (125) | 推诚置腹 | (153) |
| 弄兵潢池  | (125) | 清风两袖 | (153) |
| 千里送鹅毛 | (127) | 瓜田李下 | (155) |

|       |       |       |       |
|-------|-------|-------|-------|
| 楚庄绝缨  | (155) | 五光十色  | (179) |
| 后来居上  | (157) | 分道扬镳  | (179) |
| 揭竿而起  | (157) | 怒发冲冠  | (181) |
| 硕大无朋  | (159) | 箪食壶浆  | (181) |
| 七步之才  | (159) | 明珠暗投  | (183) |
| 管窥蠡测  | (161) | 鸿沟为界  | (183) |
| 郢书燕说  | (161) | 绠短汲深  | (185) |
| 车水马龙  | (163) | 精卫填海  | (185) |
| 杞人忧天  | (163) | 攻败垂成  | (187) |
| 明日黄花  | (165) | 差强人意  | (187) |
| 投笔从戎  | (165) | 蝇营狗苟  | (189) |
| 进退维谷  | (167) | 攀辕扣马  | (189) |
| 鞠躬尽瘁  | (167) | 饮鸩止渴  | (191) |
| 自惭形秽  | (169) | 孙敬悬梁  | (191) |
| 管鲍之交  | (169) | 不寒而栗  | (193) |
| 雪泥鸿爪  | (171) | 翳桑饿人  | (193) |
| 红叶题诗  | (171) | 掉以轻心  | (195) |
| 怨天尤人  | (173) | 炳烛力学  | (195) |
| 周郎顾曲  | (173) | 挺而走险  | (197) |
| 投鼠忌器  | (175) | 灌水浮毬  | (197) |
| 闻雷失箸  | (175) | 缘木求鱼  | (199) |
| 期期艾艾  | (177) | 登楼望阙  | (199) |
| 道旁苦李  | (177) | (181) | 道旁苦李  |
| (181) | 重徒互举  | (181) | 重徒互举  |
| (181) | 合浦留珠  | (181) | 拾忘遗物  |
| (181) | 塞翁失马  | (181) | 塞翁失马  |
| (181) | 断臂凤凰  | (181) | 山断果   |
| (181) | 不辛田瓜  | (181) | 断脚芙蓉  |
|       |       |       | 守株待兔  |

# ài      é 爱      鹅

【注释】 王羲之：晋朝大书法家。

【释义】 王羲之他平时非常喜欢鹅，家里也养了不少的鹅。一次他听说会稽的一个地方，有位孤姥婆饲养了一只叫得很好听的鹅，于是他和亲友一起坐着车子去观鹅。老妇听说王羲之将要到来，便将鹅杀了款待他，王羲之到来后，见鹅杀了，为此他叹惜了很久。不久又听说山阴有个道士养了一群十分好看的鹅，王羲之赶忙前去观赏，十分喜爱，很想买下这些鹅，道士说：“我这鹅不卖，只要你愿意为我写一篇《道德经》，一定把这群鹅全部送给你。”王羲欣然提笔写完了经文交给了道士，随后把鹅装入笼子里带回家里。

【典源】 《晋书·王羲之传》

# chū    kǒu    chéng    zhāng 出    口    成    章

【注释】 出口：说出话来。成章：就成文章。

【释义】 相传古代虞舜的眼睛中有两个瞳孔。他的行为和言论都成为人们的规范、准则。并作事成法，出言成章。后人比喻口才好。

【典源】 《淮南子·修务训》



ài wū jí wū  
爱 屋 及 鸟

【注释】 乌：乌鸦。

【释义】 因为爱这个人，就连他屋上的乌鸦也爱了。比喻爱某一个人连他周围的东西也都喜欢了。

【典源】 《尚书大传》卷三。

shū biān sān jué  
书 编 三 绝

【注释】 孔子：名丘，鲁国陬邑（今山东曲阜东南）人。春秋末期思想家、政治家、教育家，儒家的创始者。

【释义】 孔子到了晚年特别爱读《易经》。他翻来复去地读《易经》，竟然把编联《易经》竹简的皮绳磨断了多次。他还说：“如果老天能让我多活几年的话，我对于《易经》的辞采和内容都会研究得更加深透。”“书编三绝”这句典故是对孔子勤奋学习精神的概括，也是对后人的鼓励和鞭策。

【典源】 《史记·孔子世家》



爱屋成鸟

píng shuǐ xiāng féng  
萍 水 相 逢

【注释】 萍水：浮萍，随水飘泊。

【释义】 浮萍随水漂泊，聚散不定，偶然互相碰在一起。比喻从来不认识的人偶然相遇。也喻不深交的朋友。

【典源】 唐·王勃《滕王阁诗序》

mù yáng dú shū  
牧 羊 读 书

【注释】 牧羊：放羊。

【释义】 西晋的权臣杨俊，隐居太原。本地有位少年王象生活孤独，作人家的仆人，年龄约十七八岁，因一边牧羊，一边偷偷地读书，被主人鞭打了一顿。杨俊喜爱他珍惜时光，勤奋好学，于是便花钱将王象赎买到他家中，给他一定的条件和时间，让他继续用功读书，年长后还为他定亲娶妻。王象身为仆奴，不甘沦落，仍勤奋刻苦“牧羊读书”。后用来比喻那些生活艰苦，仍勤奋好学的人的刻苦学习精神。

【典源】 《三国志·魏书·杨俊传》



xíng yǐng xiāng diào  
形 影 相 吊

【注释】吊：慰问。

【释义】身体和影子互相安慰。形容十分孤单，无人同情或相伴。

【典源】《三国志·魏志·陈思王植传》

chún lú zhī sī  
莼 鲈 之 思

【注释】莼（chún 纯）菜：多年生水草，茎和叶表面有粘液，可以做汤吃。鲈鱼：鱼名，肉嫩而鲜美。

【释义】吴人张翰，在西晋京城洛阳作官，见秋风起而思念吴中的莼菜、莼羹以及家乡的鲈鱼。他不由地感叹道：“人一生最要紧的是满足志愿，何必要追求名望权贵，作官数千里外呢！”于是便辞官归还。思乡之情，人皆有之。“莼鲈之思”就是用来表示乡思之情，或表示隐归之志。

【典源】《晋书·文苑·张翰传》



形影相吊

yù    sù    bù    dà  
欲    速    不    达

【注释】

欲速：想要快。

【释义】

操之过急，过于性急求快，反而不能达到目的。

【典源】

《论语·子路》

dài    kuí    pò    qín  
戴    遒    破    琴

【注释】 戴逵：魏晋时音乐家、画家。

【释义】 魏晋时期，战乱频繁，民不聊生。贵族门阀观念严重。一些文人名士仕途艰难，但又不愿寄人篱下，阿谀(yú)奉承。谯国人戴逵，年轻博学，喜好谈论，善作诗文，会弹琴作诗。当朝有个太宰王晞，听说他琴弹得极好，便派人叫他演奏。戴逵却在使者面前摔碎了琴，并说：“戴逵，我不是为王公使唤的艺人。”后人以“戴逵破琴”，表示文人的清高和对达官贵人的藐(miǎo 秒)视。

【典源】

《晋书·戴逵传》